चोलों के नौकायन क्रियाकलापों की विवेचना कीजिए?

दक्षिण भारतीय इतिहास में चोलों का महत्व सिर्फ इसलिए नहीं है कि उन लोगों ने दक्षिण भारत के बड़े भू-भाग पर अधिकार कर बड़े साम्राज्य की स्थापना की थी बल्कि दक्षिण भारतीय राजवंशों में चोलवंश ही ऐसा था जिसने राजनीतिक और आर्थिक कारणों से प्रेरित होकर अनेक सामुद्रिक अभियान भी किये। इन अभियानों के परिणामस्वरूप चोल सत्ता का विस्तार श्रीलंका के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्वी एशिया में भी हुआ।

भारत के इतिहास में सामुद्रिक गतिविधियों के क्षेत्र में चोल शासकों का स्थान सर्वोपरि है। उनकी सामुद्रिक गतिविधियों को हम चार क्षेत्रों में देख सकते हैं:-

- नौसैनिक विजय
- सामुद्रिक व्यापार
- कूटनीतिक संबंध
- सांस्कृतिक विस्तार

प्राचीन हिन्दुस्तानी तारीख में चोल राजवंश की कथा-कहानी दक्षिण क्षितिज के नीचे महत्वपूर्ण अध्याय का एक महान दस्तावेज है।

भारत के इतिहास में चोल शासकों ने ही सर्वप्रथम नौसेना के महत्व को समझा। चोलों ने एक शक्तिशाली जहाजी बेड़ा का निर्माण किया जो न केवल सुपरीक्षित थे, बल्कि बड़े-2 अवसरों का मुकाबला करने में भी समर्थ थे। चोलों राजा सशक्त सेना रखते थे और उनका विजय घोष इस प्रायद्वीप की सीमा लांघकर समुद्र पार के क्षेत्रों में भी गूंजा। यद्यपि विभिन्न प्रकार के अभिलेखों एवं प्रमाणों से नाविक शक्ति के स्वरूप के संबंध में सूचना नहीं किया जा सकता। चोलों ने अपनी नाविक शक्ति के द्वारा एक विस्तृत उपनिवेशी साम्राज्य की स्थापना श्रीलंका, लक्षद्वीप, मालदीव, मलाया, प्रायद्वीप, श्री विजय (इंडोनेशिया), सुमात्रा, जावा, अंडमन-निकोबर में की। चोलों ने अपनी नाविक शक्ति के सहयोग से वाणिज्य एवं कूटनीतिक संबंध भी सुदूर पूर्व से कायम किया। यही नहीं उन्होंने विदेशों से सांस्कृतिक संबंध भी कायम किया।

चोलों की सामुद्रिक गतिविधियों का उत्कर्ष विशेष रूप से राजराज I के समय से आरंभ होता है, उसने अपनी नौसेना की सहायता से कतिपय समुद्रीय प्रदेशों पर अपने प्रभुत्व स्थापना की। चेरों का नाश करना चोलों के नाविक शक्ति-विजय की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

उसने चेरों के जहाजी बेड़े का कंदलूर के समीप नाश कर उन्हें परास्त किया, उसने मदुरा, पर अधिकार कर पाड्य राजा अमर भुजंग को बंदी बनाया। उसने कोल्लम की विजय की तथा पश्चिमी घाटों के दुर्ग उदयगिरि तथा मलैनाडु (कुर्ग) पर अधिकार कर लिया।

तंजौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजराज I ने श्रीलंका पर आक्रमण किया। वहाँ का राजा महेन्द्र पंचम पराजित हुआ। उसने अनुराधा पुरम को तहस-नहस कर दिया तथा लंका को चोल साम्राज्य में मिला लिया और यह भाग मुम्मडि-चोड मंडलम् (ममुडी चोल मण्डलम) के नाम से चोल प्रांत बन गया। उसने पोलोन्नरुवा को प्रांतीय राजधानी बनाया। "इस तरह उसने दक्षिण में लंका तथा उत्तर में कलिंग तक के प्रदेश को जीता। राजराज I के शासन के 29वें वर्ष के तंजौर अभिलेख के अनुसार उसने समुद्र के 12,000 प्राचीन द्वीपों की भी विजय की।" इन 12,000 प्राचीन द्वीपों को इतिहासकारों ने लक्षद्वीप और मालद्वीप माना है। यदि ये उल्लेख सही है तो इससे चोलों के जहाजी बेड़े की शक्ति प्रमाणित है।

राजराज I ने रट्टपाड़ी पर आक्रमण कर पश्चिमी चालुक्यों के प्रदेश को तहस-नहस कर दिया। इसकी पुष्टि तंजौर अभिलेख और चालुक्य अभिलेख दोनों से होती है। तंजौर अभिलेखानुसार राजराज I ने वेंगी के पूर्वी चालुक्यों को रौंद डाला। चालुक्य शासक शक्ति वर्मन (999 - 1011 AD) ने चोल आक्रमण की धारा अवरुद्ध करनी चाही। परन्तु उसके अनुज और उत्तराधिकारी विमलादित्य (1011 - 1018) ने राजराज I का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। ~~राजराज I का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।~~ राजराज I ने अपनी कन्या कुंदवई का विवाह इन मैत्री के स्मारक के रूप में विमलादित्य के साथ कर दिया।

राजराज I का पुत्र राजेन्द्र I अपने पिता की ही भाँति शक्तिमान सिद्ध हुआ और उसने अपने सैन्य पराक्रम से चोल साम्राज्य को गौरव के ऊँचे शिखर तक पहुँचा दिया। राजेन्द्र I ने अपने राज्यारोहण के शुरु के वर्षों में ही केरल और पाड्य राजाओं पर शक्ति पुनः स्थापित की। ~~और इन प्रांतों~~

के शासकों अपने पुत्र जटावर्मन सुन्दर को चोल पाण्ड्य की उपाधि देकर नियुक्त किया। राजेन्द्र I ने अनेक प्राचीन द्वीपों जिनमें लक्कादीव और मालदीव भी शामिल थे, जिन्हें उसके पिता राजराज I ने पहले ही जीता था अपना अधिकार कायम रखा। राजेन्द्र I की संघर्ष पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह द्वितीय जगदेकमल्ल (1016-1042 AD) के साथ हुआ चालुक्य अभिलेखों में लिखा है कि जयसिंह ने चोल शत्रु को पराजित किया। परंतु इसके विपरीत तमिल प्रशस्ति का वक्तव्य है कि "जयसिंह मुसंगी से भाग कर छिप गया।" इस मुसंगी को बेलारी जिले का उच्चंगी दुर्ग माना गया है।

तिरुवेंगट अभिलेखानुसार वीर राजेन्द्र के समय वेंगी में विद्रोह हुआ और उसने राजेन्द्र ने वेंगी के शासक सोमेश्वर को बुरी तरह से हराया। चालुक्यों को जीतने के बाद राजेन्द्र I उत्तर की ओर बढ़ा तथा गंगा और नृपति महिपाल की सीमा तक पहुँचा। तिरुमलै अभिलेखानुसार (उत्तर अर्काट जिले में कोलूर के समीप) राजेन्द्र I ने उड़ीसा, दक्षिण केरल, दण्डभुक्ति के धर्मपाल, तक्कनलाड (दक्षिण राढ़) के रणसूर, पूर्वी बंगाल के गोविंद चंद्र पाल राजा महिपाल तथा उत्तर लाडम (उत्तर राढ़) को जीता। निसंदेह यह आक्रमण अत्यंत साहस का काम था। इसकी यादगारी स्वरूप राजेन्द्र ने गंगईकोंड की विरुद धारण किया।

राजेन्द्र I ने 1017 ई० के लगभग संपूर्ण लंका को जीत लिया था। तिरुमलै प्रस्तर अभिलेख से इस बात की पुष्टि होती है। उसने गंगैकोंडचोल वीर राजेन्द्र आदि उपाधियाँ धारण की। महान विद्याप्रेमी होने के कारण ही उसने पंडित चोल की उपाधि ग्रहण की। उसने दो बार अपना दूतमंडल भी भेजा था।

1063 AD में वीर राजेन्द्र राज केसरी गद्दी पर बैठा और पूर्वी तथा पश्चिम चालुक्य से लड़ाई की। उसने कृष्णा और तुंगभद्रा के संगम पर कूडलसंगमम् (कुनूर जिला) के युद्ध में सोमेश्वर प्रथम को पूर्ण पराजित किया, जिसके बाद वेंगी

के चालुक्यों की ओर मुड़ा और बेजवाड़ा के समीप विक्रमादित्य को परास्त कर कलिंग को रौंद डाला। तथा वेंगी के विजयादित्य VII को प्रतिष्ठित किया, उसने विद्रोही केरल, पाण्ड्य और सिंहलको को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

चोलों की सबसे महत्वपूर्ण सामुद्रिक विजय → श्री विजय के शैलेन्द्र राजाओं पर थी। तमिल अभिलेख में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। श्री विजय एक महत्वपूर्ण सामुद्रिक राज्य था। इसके शासन के अंदर मालयप्रायद्वीप, सुमात्रा, और जावा और पोडीस द्वीप आदि थे। भारत और चीन के बीच के सामुद्रिक रास्ते पर इसके अधिकार थे।

यह कहना बड़ा कठिन है कि इस आक्रमण के पीछे चोल राजा का क्या उद्देश्य था? संभवतः इस विजय अभियान का प्रमुख उद्देश्य था कि श्री विजय पर प्रभुत्व स्थापित हो जाने से भारत को चीन जाने के लिए सामुद्रिक मार्ग भी प्राप्त हो जाता और चीन तथा भारत का सामुद्रिक व्यापार प्रारंभ हो जाता। दूसरा कारण यह था कि राजेन्द्र II दिग्विजय कर के समुद्रीय-भूप्रदेशों के व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करना चाहता था। और इस क्रम में राजेन्द्र ने सफलता प्राप्त की।

चूँकि राजा शैलेन्द्र मार्ग विजयोत्तुंग वर्मन का उत्तराधिकारी था, जिसने नागपट्टम में राजराज I के शासन के 21 वर्षों में एक बौद्ध विहार अनैमंगल नामक गाँव दान में दिया था। राजेन्द्र प्रथम ने इस दान को अपने शासन काल में वैधता प्रदान की थी, लेकिन इन दोनों राजाओं के बीच 1014-1025 के बीच शत्रुता की शुरुआत हुई। इन्हीं सब कारणों से राजेन्द्र प्रथम ने युद्ध किया। कारण जो भी रहा हो राजेन्द्र प्रथम का यह अभियान सफल रहा और उसने कदरम तथा राजधानी श्री विजय के ऊपर कब्जा कर लिया। कंदार

राजा श्रिम विजयोत्तुंगवर्मन को बन्दी बना लिया गया। यह कहना बड़ा कठिन है कि कितने दिनों तक चोल का इस क्षेत्र पर अधिकार रहा वीर राजेन्द्र ने भी कंबदर के ऊपर आक्रमण किया था। तथा 1069 AD एक राजा को वहाँ की गद्दी पर बैठाया था।

सामुद्रिक व्यापार

चोलों की नौसेना और जलबेड़े ने समुद्रीय व्यापार में उन्होंने काफी मदद की, उनका व्यापारी संबंध श्री विजय फारस चीन और अरब के साथ था। समुद्रीय व्यापार से चोलों की समृद्धि में काफी वृद्धि हुई।

श्री विजय के साथ चोलों का सम्बन्ध काफी दिनों तक कायम रहा और दोनों के बीच काफी दिनों तक व्यापारी संबंध चलता रहा दो विहार की स्थापना श्री विजय के द्वारा की गयी। सुमात्रा के तमिल अभिलेख से पता चलता है कि 13वीं सदियों तक भारत और श्री विजय के साथ व्यापारी संबंध कायम रहा।

दसवीं सदी के अन्त में तथा ~~बारहवीं~~ ग्यारहवीं सदी के शुरु में जब चीन की राजनीतिक स्थिति समान हुई तो उस समय की सौंग सरकार ने विदेशी व्यापार पर ध्यान देना शुरु किया।

इसके लिए उसने विदेशी व्यापारियों को चीन बुलाने के उद्देश्य से विदेशों में मशीन भेजने का काम किया। चोलों ने इस अवसर का फायदा उठाया। चोल सम्राट 1016, 1034, 1036 ई० में विभागीय एवं व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपना शिष्ट मंडल भेजा। अन्त में 22 सौदागरों के दल को भी भेजा व्यापार के वस्तुओं में कपूर, हाथी दाँत सुगंधित धूप सुहागा लौंग गुलाब पत्ती आदि प्रमुख थे। चीन से अधिक परिमाण में सोना भारत लाया गया।

चोल अभिलेखों में अरबों की अश्व सेना का महत्व और कुदीरैक सेट्टियों का उल्लेख मिलता है। यह सेट्टी घोड़ों का व्यापार करते थे। वे विशेषकर अरब से घोड़ा लेते थे और चोल राजकुमारों और सामंतों के यहाँ बेचते थे इस तरह देखते हैं कि चोलों का अरबों के साथ भी व्यापारिक संबंध था।

भारत में अरब घोड़ा का व्यापार दक्षिण भारत में चोलों के समय से शुरू हुआ इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। फारस के खाड़ी के पूर्वी किनारे पर शिराफ नामक एक सर्वदेशीय (cosmopolitan) शहर स्थित था।

इब्न-हव काल नामक एक समकालीन अरब लेखक ने लिखा है कि 'शिराफ' ऐसी जगह पर था कि वहां (शिराफ पर) आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता था। तथा वहाँ की जलवायु भी अच्छा नहीं था। फिर भी सम्पूर्ण हिन्द महा सागर चीन जावा सुमात्रा के नाविक और व्यापारी वहां आते थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय व्यापारी में चोल ही रहे होंगे।

कूटनीति संबंध

चोलों का चीन के साथ कूटनीति संबंध था, इस बात की पुष्टि चीन राजाओं द्वारा चीन (आदि) में भेजे गए दूत मण्डली से होती है। राजराज I ने एक दूत मण्डल चीन भेजी थी। चाउ-जु-कुआ के अनुसार इस मण्डली के सदस्यों बहु-मूल्य उपहार के साथ चीन पहुंचे, तथा उन्हें बड़ा सम्मान दिया गया। श्री राजेन्द्र चोल ने भी एक दूत मण्डल चीन भेजा था, जो 1033 ई० में चीन पहुंचा।

श्री विजय के साथ चोलो के राजनयिक संबंध की पुष्टि इस बात से ज्ञात होता है कि चोल राजा को कुंबदर के मॉगों को निश्चित करने के लिए बुलाया गया था। कदरब (कदरब) के प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि कंबोज राजा से राजेन्द्र I ने एक अनूठा पत्थर उपहार में पाया था। इस से सिद्ध होता है कि श्री विजय के साथ चोलों का राजनीतिक संबंध था।

कुलोतुंग के शासन काल में भी कंबोडिया I एवं वर्मन के साथ कूटनीतिक संबंध कायम रहा।

सांस्कृतिक गतिविधियां

चोल साम्राज्य के सांस्कृतिक गतिविधियों का अनुमान इसी से लगाया जाता है जहां आपस में इतने व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध कायम हुई,

वहाँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान आवश्य हुआ होगा। श्रीविजय और कथा के शैलेन्द्र राजा श्री-राम-विजयोतुंग-वर्मन द्वारा निर्मित नेगापट्टम के बौद्ध विहार को राजराज प्रथम (985-1014) ने एक गाँव दान दिया। चोल राजाओं ने भी शैलेन्द्र राजाओं से मित्रता स्थापित की। इसी क्रम में शैलेन्द्र राजाओं ने चोल राज्य के नेगापट्टम में एक बौद्ध विहार बनवाया।

निष्कर्ष

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि चोलों ने सामुद्रिक विजय, सामुद्रिक व्यापार, कूटनीति और संस्कृति क्षेत्र के संबंध में काफी विकास किया। उनकी ये सारी सामुद्रिक उपलब्धियों के पीछे उनके द्वारा नौसेना और जलबेड़े के निर्माण का हाथ था। इन्हीं की बदौलत चोल एक सामुद्रिक शक्ति बन सके। उनकी इन्हीं सामुद्रिक गतिविधियों ने भारत में ही नहीं विदेशों में भी एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरने का मौका प्रदान किया।